XII

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Sociology

Lecture III

परिवार के प्रकार -

(III) सत्ता, वंशनाम, निवास और उत्तराधिकार के आधार पर

(i) पितृसत्तात्मक परिवार - यह परिवार का वह स्वरूप है जहां परिवार की सत्ता, वंशनाम और उत्तराधिकार पुरुष पक्ष से सम्बन्धित हो। पितृसत्तात्मक से तात्पर्य परिवार की सत्ता पर पिता का पूर्ण अधिकार से है। इस तरह के परिवार में विवाह के पश्चात पत्नी पति के घर जाती है तथा पिता के बाद परिवार का दायित्व पुत्र द्वारा निभाया जाता है। सम्पत्ति पर पिता के बाद पुत्र का अधिकार होता है। इस प्रकार के परिवारों को पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय, पितृस्थानीय तथा पितृमार्गी नाम से जाना जाता है।

(ii) मातृसत्तात्मक परिवार - यह परिवार का वह स्वरूप है जहां परिवार की सत्ता, वंशनाम, निवास और उत्तराधिकार माता या स्त्री से सम्बन्धित है। मातृसत्तात्मक शब्द से माता या पत्नी के मुखी अधिकार का संकेत मिलता है। इस तरह के परिवार में माता का अधिकार होता है, वंशनाम माता से चलता है, विवाह के बाद पति पत्नी के घर निवास करता है और उत्तराधिकार मातृपक्ष से निर्धारित होता है, यह परिवार मातृस्थानीय, मातृवंशीय, मातृमार्गी के नाम से जाना जाता है। खासी, गारो, मालाबार के नायर जैसी

(IV) - जन्म व प्रजनन के आधार पर (डेविस)

(i) जन्म मूलक परिवार - यह परिवार का वह स्वरूप है जिसमें व्यक्ति जन्म लेता है और सामाजिक नियमों को सीखता है।

(ii) प्रजनन मूलक परिवार - यह परिवार का वह स्वरूप है जिसमें व्यक्ति बच्चों को जन्म देता है उनका लालन पालन करता है और उन्हें सामाजिक नियमों से अवगत कराता है।

(V) सम्बन्ध के आधार पर (R. Linton) =)

(i) समरक्त परिवार - यह परिवार का वह स्वरूप है जिसका निर्माण एक ही खून व रक्त के व्यक्तियों के द्वारा होता है।

(ii) विवाह सम्बन्धी परिवार - यह परिवार का वह स्वरूप है जिसका निर्माण पति - पत्नी उनके बच्चों और विवाह से सम्बन्धित कुछ रिश्तेदार आदि के द्वारा होता है। खरिया जनजाति में इसका प्रचलन है।